स्टीफ़न आर. कवी
के
विवेकपूर्ण विचार

स्टीफ़न आर. कवी की बेस्ट-सेलिंग पुस्तकों से ली गईं यादगार व महत्त्वपूर्ण सीखों का संकलन

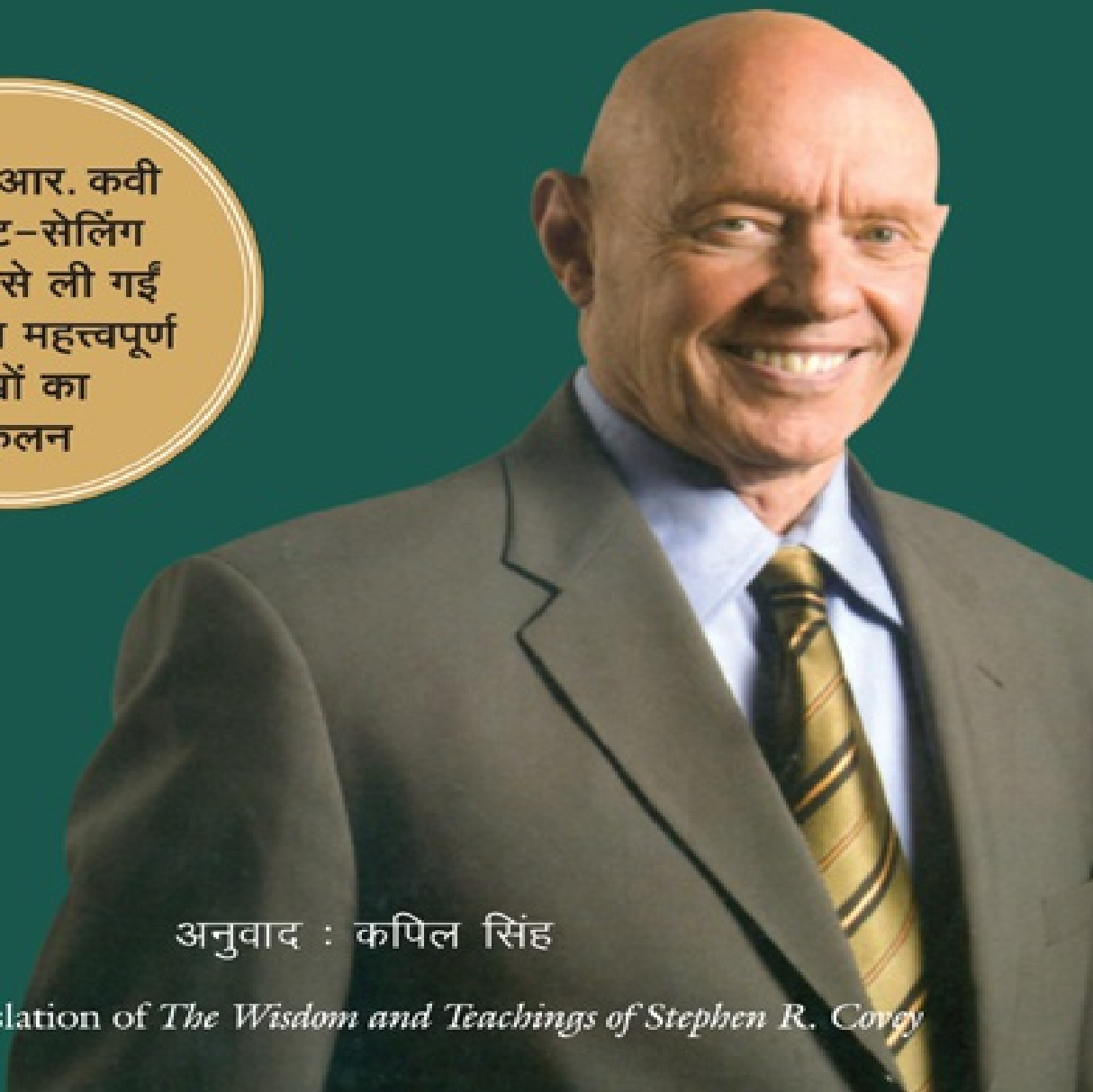

अनुवाद : कपिल सिंह

Hindi translation of *The Wisdom and Teachings of Stephen R. Covey*

स्टीफ़न आर. कवी
के
विवेकपूर्ण
विचार

स्टीफ़न आर. कवी
के
विवेकपूर्ण
विचार

अनुवाद : कपिल सिंह

मंजुल पब्लिशिंग हाउस

First published in India by

Manjul Publishing House
Corporate and Editorial Office
• 2nd Floor, Usha Preet Complex, 42 Malviya Nagar, Bhopal 462 003 - India
Sales and Marketing Office
• 7/32, Ground Floor, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi 110 002 - India
Website: www.manjulindia.com

Distribution Centres
Ahmedabad, Bengaluru, Bhopal, Kolkata, Chennai,
Hyderabad, Mumbai, New Delhi, Pune

Hindi translation of The Wisdom and Teachings of Stephen R. Covey

Copyright © 2012 by FranklinCovey Company

Franklin Covey and the FC logo and trademarks are trademarks of
Franklin Covey Co. and their use is by permission.

FranklinCovey India and SouthAsia
JIL Tower A, Institutional Area,
Ground Floor, Plot No. 78, Sector-18,
Gurgaon, Haryana – 122 001 India Tel: +91 124 4782222
Mumbai: +91 22 42754444, Bangalore: +91 80 40716888
Website: www.franklincoveysouthasia.com

This edition first published in 2014
Second impression 2016

ISBN 978-81-8322-397-3

Translation by Kapil Singh

Printed and bound in India by Thomson Press (India) Ltd.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any form, or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise) without the prior written permission of the publisher. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

विषय-सूची

प्रस्तावना
पाठकों के लिए
उत्तरदायित्व का सिद्धांत
संतुलन का सिद्धांत
चुनाव का सिद्धांत
योगदान का सिद्धांत
साहस का सिद्धांत
प्रभावशीलता का सिद्धांत
परानुभूति का सिद्धांत
अखंडता का सिद्धांत
नेतृत्व का सिद्धांत
सीखने का सिद्धांत
प्रेम का सिद्धांत
क्षमता का सिद्धांत
आत्म-अनुशासन का सिद्धांत
सह-अस्तित्व का सिद्धांत
विश्वास का सिद्धांत
सच्चाई का सिद्धांत
दृष्टिकोण का सिद्धांत
सभी की जीत का सिद्धांत
स्टीफ़न आर. कवी के प्रिय उद्धरण
संदर्भ सूची

प्रस्तावना

इस पुस्तक में वर्तमान दौर के महान शिक्षक, डॉ. स्टीफ़न आर. कवी के चुनिंदा विचार व विवेकपूर्ण कथन समाहित हैं।

एक युवक के रूप में डॉ. कवी से आशा की जाती थी कि वे अपने पारिवारिक होटल व्यवसाय में हाथ बटाएँ, लेकिन यह रास्ता उनके लिए नहीं था। वे अलग तरह से योगदान देना चाहते थे – एक शिक्षक बनकर मानवीय संभावनाओं को उनमुक्त बनाने हेतु अपने जीवन को समर्पित कर के। उन्होंने लिखा कि "प्रत्येक व्यक्ति मूल्यवान है, जो तकरीबन असीमित संभावनाओं व क्षमताओं से भरा हुआ है।"

अपने सपने को साकार करने के लिए वे हार्वर्ड ग्रेजुएट स्कूल से पढ़ाई पूरी करने के बाद विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर बन गए। इसके बाद उन्होंने एक परामर्शदाता के रूप में अपने प्रभाव का दायरा बढ़ाते हुए व्यापार-जगत व शासकीय लीडरों तक पहुँच बनाई। 1989 में द 7 हैबिट्स ऑफ़ हाइली इफ़ैक्टिव पीपल (जिसे बहुत-से लोग हमारे समय की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तक मानते हैं) के प्रकाशन के बाद डॉ. कवी ने दुनिया भर में अपनी छाप छोड़ी, जो अभी तक क़ायम है। इस पुस्तक के साथ ही उनकी अन्य रचनाएँ घर और दफ़्तर के पुस्तकालयों में देखी जा सकती हैं।

न केवल उनके द्वारा दी गई शिक्षा, बल्कि उनका जीवन भी हमें लगातार उपयोगी बने रहने वाले सिद्धांतो के प्रभाव की याद दिलाता है। ऊल-जलूल हरकतों या प्रचार पाने के लिए जोड़-तोड़ करने में उनकी कोई रूचि नहीं थी। उनका जुनून तो जीवन की स्थिर, निर्विकार व सदा नई बने रहने वाली सच्चाइयों को स्पष्ट करने व सिखाने के लिए था – वे सच्चाइयाँ जो पेशेवर सफलता और व्यक्तिगत संतुष्टि, दोनों पर ही समान रूप से लागू होती हैं। और वे उन सच्चाइयों के सहारे जिए भी – जैसा कि उनके असंख्य मित्र, परिवार के सदस्य व शिष्य प्रमाणित करते हैं।

जीवन के निर्धारक सिद्धांतों – जैसे अखंडता, जीवन में संतुलन, दृष्टि व प्रेम – को बताने वाली इस पुस्तक के उद्धरण और कहानियाँ, इन सिद्धांतों को आसान और श्रेष्ठ तरीक़े से प्रस्तुत करते हैं।

हाँलाकि डॉ. कवी अब हमारे बीच नहीं हैं, हम सदा उनकी शिक्षा से लाभान्वित होते रहेंगे – कि सच तो सच है और स्वयं ही अपना प्रमाण है, कि आप सिद्धांतों का पालन किए बिना इस ब्रह्मांड से कुछ पाने की आशा नहीं कर सकते, और आपका यह जीवन बहुत मूल्यवान है, जिसे साधारण रूप से जी कर व्यर्थ गवाँया जा सकता है या फिर महानता की दिशा में निवेश किया जा सकता है।

— कवी परिवार

पाठकों के लिए

इस संग्रह का संकलन विभिन्न पुस्तकों व लेखों के माध्यम से किया गया है। प्रत्येक उद्धरण के बाद एक अंक दिया गया है जो पुस्तक के अंत में दी गई संदर्भ-सूची से संबन्धित है।

उत्तरदायित्व
का
सिद्धांत

मेरे सात वर्षीय बेटे स्टीफ़न ने आँगन की देख-रेख का ज़िम्मा ले लिया।

मैंने कहा, “देखो बेटा, हमारे पड़ोसी का अहाता कितना हरा-भरा और साफ़-सुथरा है! हम यही तो चाहते हैं : हरियाली और सफ़ाई। अब हमारे आँगन की ओर देखो। क्या तुम्हें कई तरह के रंग दिख रहे हैं? इसे हरियाली नहीं कहते। हमें इसे हरा और साफ़ बनाना ही होगा।”

दो सप्ताह, दो शब्द : हरियाली और सफ़ाई।

वह शनिवार का दिन था। उसने कुछ नहीं किया। रविवार... कुछ नहीं। सोमवार... कुछ नहीं। मंगलवार को जब मैं अपने काम पर जाने के लिए निकला, तो मेरी नज़र पीले, अव्यवस्थित आँगन और जुलाई के चिलचिलाते सूरज पर पड़ी।

यह ठीक नहीं हो रहा था। मैं उसके प्रदर्शन से उदास और असंतुष्ट था।

मैं हमारे बीच हुए समझौते पर बात करने के लिए तैयार था। लेकिन स्वयं से किए हुए उसके वादे का क्या होता?

तो मैंने दिखावटी मुस्कान के साथ कहा, “क्यों बेटा, सब कैसा चल रहा है?”

“बढ़िया!” उसने कहा।

मैंने धैर्य रखा और रात के खाने के बाद तक रुका रहा। फिर मैंने कहा, “बेटा, हम वही करते हैं जो हमारे बीच तय हुआ था। हम आँगन का एक चक्कर लगाते हैं और तुम मुझे दिखाना कि तुम्हारे प्रबंधन के अंतर्गत सब कैसा चल रहा है।”

जैसे ही हम दरवाज़े के बाहर निकले, वह काँपने लगा। उसकी आँखों में आँसू छलक आए, और जब हम आँगन के बीच पहुँचे तो वह रो पड़ा।

“यह बहुत मुश्किल है, डैडी!”

क्या बहुत मुश्किल है, मैंने सोचा। तुमने तो कुछ काम किया ही नहीं! लेकिन मैं जानता था कि क्या मुश्किल है – आत्म-प्रबंधन, आत्म-निरीक्षण। तो मैंने कहा, “क्या मैं कुछ मदद कर सकता हूँ?”

“क्या सचमुच आप मदद करेंगे, डैडी?” उसने कहा।

“हमारा क्या समझौता हुआ था?”

“आपने कहा था कि यदि समय रहा तो आप मेरी मदद करेंगे।”

“मेरे पास समय है।”

वह दौड़कर घर के अंदर गया और दो बोरे लेकर लौटा। एक बोरा मुझे देते हुए उसने कहा, “क्या आप उसे उठा सकते हैं? मुझे इससे घिन होती है।” उसका इशारा शनिवार रात के बारबेक्यू से हुए कूड़े की तरफ़ था।

मैंने ऐसा ही किया। मैंने ठीक वही किया जो उसने मुझसे करने के लिए कहा। और तब उसने मन ही मन ख़ुद से एक वादा किया। वह उसका आँगन, उसका कार्यक्षेत्र बन गया।

उस पूरी गर्मी के मौसम में उसने सिर्फ़ दो या तीन बार और मदद माँगी। उसने उस आँगन की देखभाल की। मेरी निगरानी में वह जितना हरा और साफ़ था, उससे बेहतर स्थिती में उसे मेरे बेटे ने रखा।[7]

उत्तरदायित्व से ज़िम्मेदारी का अहसास होता है।[3]